वैश्वीकरण

हिन्दी साहित्य

और

आलोचना

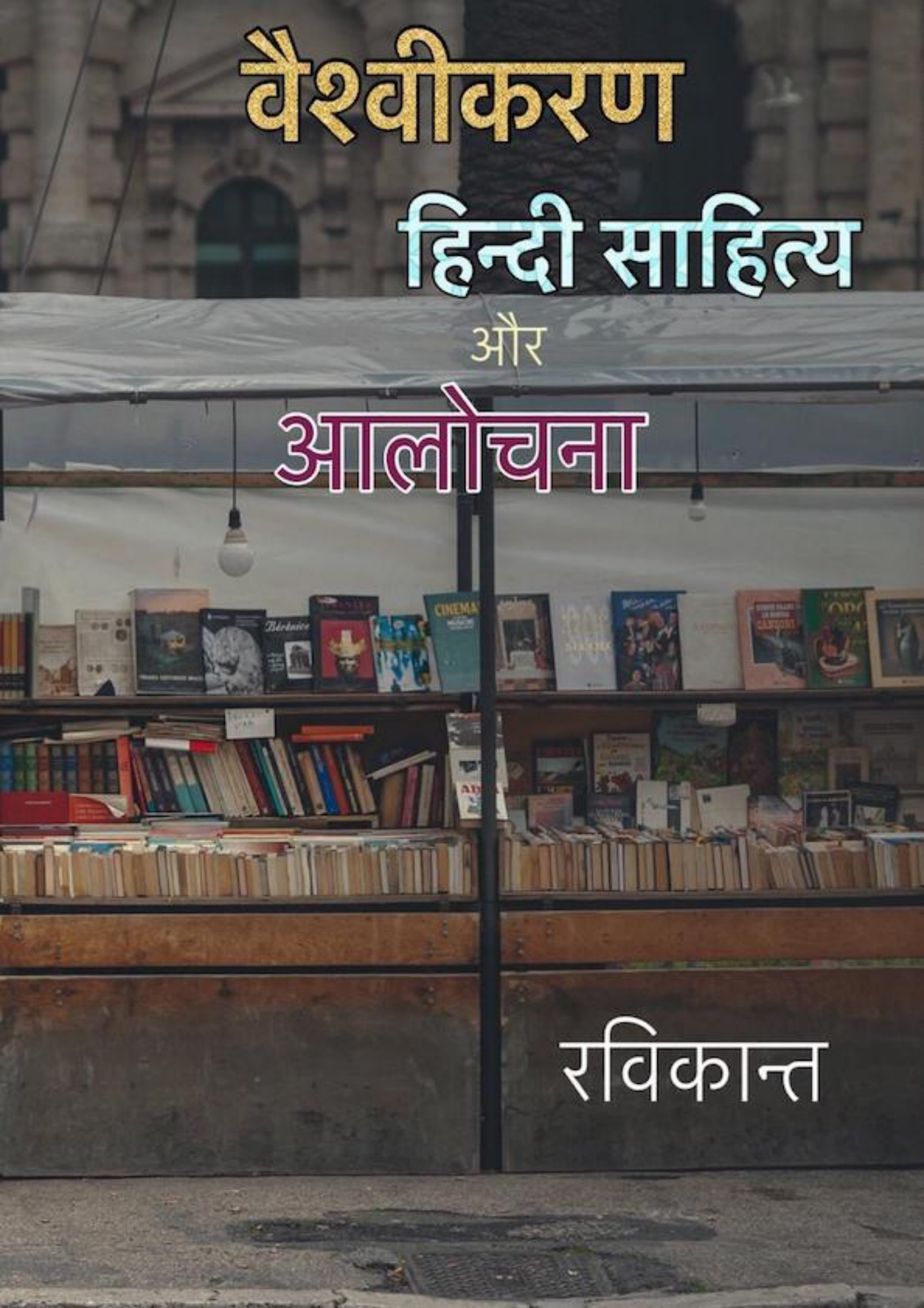

रविकान्त

वैश्वीकरण, हिंदी साहित्य और आलोचना

रविकान्त

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अक्टूबर, 2020

© रविकांत

ISBN: 978-93-87621-72-5

अनुक्रम

हिंदी साहित्य में आधुनिकता का समाजशास्त्र	4
किसान समस्या, प्रेमचंद और जादुई यथार्थवाद	25
भारत में तुलनात्मक साहित्य का महत्व/ भारतीय साहित्य की रूपरेखा	33
बाज़ारवाद, स्त्री और हिंदी उपन्यास	48
हिन्दी उपन्यासों में हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्ध	59
स्वांत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में चित्रित सांप्रदायिक राजनीति का टकराव	75
स्वतंत्र भारत के हिन्दी उपन्यासों में चित्रित हिन्दू-मुस्लिम संबंध	102
समीक्षा – कितने कठघरे (रजनी गुप्त)	123
हिन्दी कहानी: पाठ और समीक्षा	132
समीक्षा: ...और दिन सार्थक हुआ (मधु अरोड़ा)	137
हमारे समय की कहानियाँ	142
शिवरानी देवी के साथ प्रेमचंद के संबंध	165
प्रेमचंद की समीक्षाएं: पंच परमेश्वर का न्याय	174
उग्र की आत्मकथा 'अपनी खबर' और अन्य साहित्य में जीवन और समाज के अन्तर्संबंध का सच	182

पद्मावत : लोककथा और ऐतिहासिक किरदारों के सहारे सृजित की गई प्रेमकथा 197

विनय पत्रिका: पुनर्मूल्यांकन 209

जीवन की अंतर्यात्रा है-'परिवर्तन' 220

समय की यात्रा के कविः अरूण कमल 228

हिन्दी साहित्य का आरंभ 242

कविता के नए हस्ताक्षर 263

‘आषाढ़ का एक दिन’ की नाट्यभाषा 273

हिंदी साहित्य में आधुनिकता का समाजशास्त्र

हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के समाजशास्त्र पर लम्बी बहस होती रही है। इस बहस मुबाहिसे में आधुनिकता की अवधारणा कभी 'आदिकाल' तक पहुँच जाती है तो कभी 'प्रयोगवाद' पर आ जाती है। हिन्दी साहित्य में आधुनिकता के विषय में दो धाराएँ मिलती हैं। एक ओर डा. रामविलास शर्मा हैं और दूसरी ओर हैं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल। डा. रामविलास शर्मा की आधुनिकता की अवधारणा पश्चगामी गति से चलायमान रही है। एक बार तो वे मानते हैं कि हिन्दी साहित्य में आधुनिकता 19वीं सदी में आई है। दूसरी बार उनकी दृष्टि 'विकसित' होती है। पुनः वे मानने लगते हैं कि हिन्दी साहित्य में आधुनिकता 14वीं शताब्दी से ही आ गई थी। 1977 ई. में प्रकाशित 'महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नव जागरण' में उनका वक्तव्य गौर करने लायक है। उन्होंने लिखा है कि ''हिन्दी में आधुनिक साहित्य 19वीं सदी के उतरार्द्ध में पैदा हुआ किन्तु हिन्दी साहित्य में आधुनिकता 14वीं सदी में ही आ गई थी।''[1] रामविलास जी के इस अंतर्विरोध पर विचार करना जरूरी है।

रामविलास जी के 'आधुनिक साहित्य' और 'साहित्य में आधुनिकता' पर दृष्टि डालना जरूरी है। रामविलास जी 'सौभाग्य' से मार्क्सवादी हैं और ऐसे 'खोजी' किस्म के मार्क्सवादी हैं कि ऋग्वेद में भी उन्हें मार्क्सवाद के तत्व मिल जाते हैं। रामविलास जी की उम्र के साथ उनके विचार भी 'विकसित' होते गए हैं।

हिन्दी साहित्य में रामविलास जी पहले आलोचक हैं जिन्होंने आधुनिकता की अवधारणा की सामंतवाद विरोध के रूप में पहचान की है। सामंतवाद विरोध के हवाले से वे विद्यापति तक में आधुनिकता खोज लेते हैं। रामविलास जी का कहना है कि हिन्दी में विद्यापति के साहित्य में सामंतवाद विरोधी प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। विद्यापति कृत 'कीर्तिलता' में जौनपुर का यथार्थवादी चित्रण है। रामविलास जी मानते हैं कि विद्यापति से यथार्थवाद की शुरूआत होती है। इस लिहाज से शर्मा जी को लगता है कि विद्यापति के साहित्य में आधुनिकता है। विद्यापति के गीतों के विषय में उनका मानना है कि इनमें जौनपुर की विशेषरूप से स्त्रियों की दशा का चित्रण मिलता है। वैसे, कीर्तिलता और कीर्तिपताका दोनों दरबारीकाव्य हैं। एक तरह से ये प्रशस्ति काव्य ही हैं। इनमें मध्ययुगीनता के हजारों तत्व हैं। रही बात विद्यापति के गीतों की, तो यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि गीतों में स्त्रियों का चित्रण राधाकृष्ण के नाम पर ही हुआ है।

वास्तव में, रामविलास जी मानते हैं कि आधुनिकता की शुरूआत पूँजीवादी चेतना से होती है। जहाँ सामंतवाद विरोध है वहाँ पूँजीवादी चेतना होगी। इसीलिए जो साहित्य सामंतवाद विरोधी है उसमें आधुनिकता होगी। यही कारण है कि रामविलास जी भक्तिकाल से आधुनिकता की शुरूआत मान लेते हैं।

सामंतवाद विरोध का मतलब यह कतई नहीं है कि वह आधुनिक ही होगा। भक्ति काव्य में अवश्य सामंतवाद विरोध है। भक्तिकाल से पूर्व हिन्दी साहित्य (काव्य) सामंतों, राजाओं के दरबार में लिखा जा रहा था। इस साहित्य के कुछ भी सामाजिक सरोकार नहीं थे। यह दरबारी काव्य था और प्रशस्ति स्वरूप रचा जा रहा था। आदिकाल में काव्य की

मुख्य प्रवृत्ति वीरगाथात्मक है। इसी लिहाज से आचार्य शुक्ल ने इस काल को वीरगाथाकाल की संज्ञा दी है। इस काल के काव्य में राजाओं या सामंतों की झूठी तारीफ़ें हुआ करती थीं। यह काव्य राजाओं में वीरता का संचार जरूर करता था।

साहित्य समाज को अभिव्यक्त करता है। 'आदिकाल' का काव्य समाज की पहचान कराता है। हर्षवर्धन (मृत्यु सन् 746 ई.) के बाद भारत छोटे-छोटे राज्यों में बंट गया था। अब कोई केन्द्रीय सत्ता न रह गई थी। लिहाजा उत्तर-पश्चिमी भारत में छोटे-छोटे राजपूत राजवंशों का उदय होता है। ये राजपूत आपस में ही झगड़ते रहते थे। हालांकि अब भारत में मुस्लिम आक्रमण शुरू हो गए थे लेकिन इन राजपूतों को इनकी परवाह न थी। राजपूतों के आपसी युद्ध मुख्य रूप से 'स्त्री' को लेकर होते थे। राजपूत सुरा और सुन्दरी में मस्त रहते थे। पृथ्वीराज रासो के आधार पर कहा जाता है कि पृथ्वीराज चौहान और जयचन्द की दुश्मनी भी 'स्त्री' को लेकर हुई थी। जयचन्द की पुत्री संयोगिता को पृथ्वीराज उठाकर ले गया और उससे शादी कर ली। भारत के इतिहास में यह दुश्मनी मशहूर है। इसने मुस्लिम सत्ता के स्थापित होने में बहुत मदद की। जयचन्द ने मुहम्मद गौरी की मदद करके पृथ्वीराज की सत्ता को खत्म करवाया। कुल मिलाकर, वीरगाथा काल के काव्य का समाज से, जनता से कोई सरोकार नहीं था। यह काव्य मात्र विलासिता को बढ़ावा देने वाला है।

सम्पूर्ण भारतीय साहित्य के इतिहास में पहली बार भक्ति काल में कविता सीधे तौर पर और व्यापक स्तर पर जनता से जुड़ती है। प्रो. मैनेजर पाण्डेय के अनुसार भक्तिकाल की सबसे बड़ी विशेषता है-लोक भाषा का उत्थान। उनका मानना है कि